Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)
with International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2601S01V14P033

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Humanities And
Indian Knowledge System Feb'26
Issue–I(I), Volume–XIV

दूरदर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा का सामान्य लोगो पर प्रभाव का अध्ययन

Dr. Krishna P. Meshram,
Associate Professor & Head Sociology,
Pragati Mahila Kala Mahavidyalaya, Bhandara
Mo. 9422134001
E Mail: kp_pmm@rediffmail.com

सारांश: दूरदर्शन ज्ञान और मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम है, जिसने विश्व भर में ना केवल सूचना प्रसारण का कार्य किया है, बल्कि सामाजिक जनजागृति का भी कार्य किया है| वर्त्तमान में दूरदर्शन के असंख्य चैनलों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के विशिष्ट परंपरा को ही प्रसारण के द्वारा सामान्य लोगो की सोच, मानसिकता या दृष्टिकोण बनाने का कार्य किया जा रहा है| जिसे सामान्य लोग भी विशिष्ट परंपरा को ही भारतीय ज्ञान परंपरा मानने लगे है| जिस भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक, चार्वाक, जैन, बुद्ध, मध्ययुगीन संतों के कार्य, आधुनिक समाजसुधारकों के कार्यो इत्यादि मिश्रित कार्यो, आचरणों के नियमों को दर्शाने की परंपरा का उल्लेख है, वहां किसी एक परंपरा को ही श्रेष्ठ मानना और उसे मानने वाले को ही राष्ट्रभक्त घोषित करना और राष्ट्रवाद की नयी परिभाषा करना, पक्षपात के नरेटीव्ह को जन्म देती है| अध्ययनकर्ती ने दूरदर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा का सामान्य लोगो पर होनेवाले प्रभाव को अपने शोध निबंध का विषय बनाकर द्वितिय तथ्यों के आधार पर इस शोध निबंध का विश्लेषण किया है|

बिज शब्द: दूरदर्शन, भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रवाद

प्रस्तावना: दूरदर्शन केवल एक तांत्रिक साधन नहीं बल्कि एक क्रन्तिकारी परिवर्तन व प्रभाव का माध्यम है, जो एक बड़े समूह को प्रभावित करता है| इसे शिक्षा, ज्ञान और मनोरंजन के एक सशक्त माध्यम के रूप में लोगो के सामने लाया गया था| विशेष रूप से मनोरंजन व ज्ञान की दृष्टि से इसे बहुत महत्वपूर्ण माना जाता रहा है | दिल्ली में सितम्बर के महीने में १९५९ को प्रथमतः इसकी सेवा प्रदान की गई और १५ सितम्बर २०२५ में दूरदर्शन का ६६ वां स्थापना दिवस मनाया गया| यदि प्रसार-कक्ष की सेवाओं के आधार पर देखा जाय तो दूरदर्शन विश्व का दूसरा सबसे विशाल प्रसारक है| इसके राष्ट्रिय नेटवर्क में ६४ दूरदर्शन केंद्र, २४ क्षेत्रीय समाचार एकक, १२६ दूरदर्शन रखरखाव केंद्र, २०२ उच्च शक्ति ट्रांसमीटर, ८२८ लो पॉवर ट्रांसमीटर, ३५१ अल्पशक्ति ट्रांसमीटर, १८ ट्रांसपोंडर, ३० चैनल तथा डीटीएच सेवा भी शामिल है| देश की १४६ करोड़ जनसंख्या का बड़ा समूह उपर्युक्त सेवाओं में से अनेक सेवाओं का दर्शक है| शुरुवाती दौर में जहाँ दूरदर्शन द्वारा समाचार, शिक्षा और मनोरंजन प्रसारण को प्राथमिकता दी गई थी, जिसमे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता के पहलुओं को महत्वपूर्ण माना जाता रहा था, तो समय के साथ – साथ दूरदर्शन नेटवर्क चैनलों के विस्तार के साथ-साथ प्रसारण माध्यम का स्वरुप तथा कार्यक्रमों के प्रसारण तथ्यों में भी बदलाव आने लगे| दूरदर्शन ने कम समय में प्रसिद्धि तो प्राप्त किया ही है साथ ही लोगो के दैनिक जीवन का यह सशक्त माध्यम बन गया| इसने सूचना प्रसार के साथ-साथ जनमत तयार करने का भी प्रयास किया है| इतना ही नहीं तो दूरदर्शन ने देश के भिन्न-भिन्न लोगो की संस्कृति, परंपरा, रीति रिवाजो को जन मानस तक पहुँचाने के लिए थरारक कार्यक्रम से लेकर मानसिक उद्दीपन देने जैसे कार्यक्रम उपलब्ध करा दिये|

दूरदर्शन के नियमित दर्शक के रूप में 'सामान्य लोग' दूरदर्शन को दर्शक के रूप में प्राप्त हुये| इतना ही नहीं तो इन दर्शकों में बड़ी संख्या में महिलाओं का बड़ा वर्ग दूरदर्शन को दर्शक के रूप में मिला| क्योंकि आज भी ४०.०३% महिलाएं ही काम पर जाती है, या नौकरी करती है| तात्पर्य यह है की, गृहिणी महिलाओं को अधिक समय दूरदर्शन देखने के लिए वक्त उपलब्ध होता है, और किसी भी परंपराओं को मानने में महिलाये महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाती है| चूँकि शुरुवाती दौर में शिक्षा व् सामाजिक मुद्दों पर आधारित धारावाहिक दूरदर्शन का मुख्य बिंदु था, जिसमे हमलोग, बुनियाद, मालगुडी डेज, फौजी, उडान, ब्योमकेश बक्षी, सुरभि, शक्तिमान इत्यादि धारावाहिक एक प्रकार से समाज में होनेवाले कृतियों व् समस्याओं का प्रतिनिधित्व कर रही थी| दर्शको के स्वरुप के कारण कार्यक्रमों के स्वरुप में भी बदलाव आने लगे| अर्थात धार्मिक धारावाहिकों में रामायण, महाभारत जैसे धारावाहिकों ने दर्शकों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी कर दी| सर्वेक्षणों से भी पता चला की हमलोग, बुनियाद, मालगुडी डेज, फौजी, उडान, ब्योमकेश बक्षी, सुरभि जैसे धारावाहिकों ने जितने प्रभाव लोगो पर नहीं डाले व् इन धारावाहिकों के लिए दर्शकों की संख्या जीतनी नहीं होती थी उससे कही अधिक धार्मिक धारावाहिकों ने जैसे- रामायण, महाभारत (१९८८), श्रीकृष्ण, देवो के देव महादेव, महाभारत(२०१३), राधाकृष्ण, ओम नमह: शिवाय, जय हनुमान, धर्म योध्दा गरुड़, विष्णु पूराण, श्री गणेश, माता की चौकी, सुर्यपुत्र कर्ण, श्रीमद

भगवत महापुराण, उपनिषद् गंगा, देवलोक जैसे धार्मिक धारावाहिकों ने सामान्य लोगो पर प्रभाव डाले, व् इन धारावाहिकों के दर्शकों की संख्या भी बढ़ने लगी| इन धार्मिक धारावाहिकों के माध्यम से जिन पूजा, कर्मकांड, परंपरा की सामान्य लोगो को जानकारी नहीं थी उससे एक बड़ा समूह परिचित होने लगा था| समय के साथ ऐतिहासिक घटनाओ पर आधारित धारावाहिकों का भी प्रसारण बढ़ने लगा और इन धारावाहिकों में दिखाई जाने वाली रानियों को भी सभी प्रकार के सांस्कृतिक व् धार्मिक परंपराओं का आचरण करते हुये दिखाया जाने लगा| इतना ही नहीं तो कई काल्पनिक तथ्यों को सामान्य लोगो ने सत्य मानकर उन परंपराओं का पालन करना भी शुरू कर दिया| जो इन परंपराओं को मानाने लगे उन्हें राष्ट्रभक्त कहा जाने लगा जो राष्ट्रवाद की नयी परिभाषा को जन्म डे रहा था|

राष्ट्रवाद: एक एसी विचारधारा है जो लोगो में राष्ट्र के प्रति प्रेम, निष्ठा, और गर्व की भावना को दर्शाती है, जिसमे लोग अपनी संस्कृति, परंपरा के आधारपर राष्ट्र की संप्रभुता, स्वतंत्रता और हितो को महत्त्व देते है और उसे ही सर्वोच्च मानते है|

परन्तु किसी विशिष्ट परंपरा को राष्ट्रवाद के पैमाने पर रखना देश हित में हानिकारक हो सकता है| यह एक ऐसे ज्ञान को जन्म दे रहा था जिससे लोगो में छद्म प्रतिमा तयार हो रही थी, सामान्य लोग उस छद्म प्रतिमा को ही ज्ञान मान रहे थे|

ज्ञान यह प्राप्त की जाती है, ज्ञान प्राप्ति की कोई सहज प्रवृत्ति नहीं होती| इसके संदर्भ में यह बात की जा सकती है की यह ज्ञानेद्रियों के अनुभव कक्षा में आनेवाले कोई भी विषय 'ज्ञान' का भाग हो सकता है, भारतीय ज्ञान परंपरा भी इसी का एक भाग है| विज्ञान निसर्ग पर अपना वर्चस्व प्रस्थापित करने के लिए विशेष प्रयत्न करता है, परन्तु विज्ञान के संदर्भ और विशेष रूप से भारत के प्ररिप्रेक्ष्य में तो यही कहा जा सकता है की इसे जो सफलता मिलनी चाहिए थी वो प्राप्त नहीं हो पायी| भले ही समाज के लोग विज्ञान का लाभ उठाकर भौतिवादी जीवनशैली अपना है, परन्तु मानव के व्यवहार में विज्ञानवादी दृष्टिकोण का आभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है|

भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक काल तक का विस्तृत इतिहास है| भारतीय दर्शन में अनेक प्रणालियाँ विकसित हुई है, जिसमे न्याय और ध्यान इत्यादि भी शामिल है, जिसके द्वारा शारीरिक, मानसिक संतुलन की बात की जाती है| भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक, गहरे विज्ञानवादी दार्शनिक चार्वाक से लेकर तो जैन दर्शन, बौद्ध ज्ञान साहित्य (इतिहास गवाह है की नालंदा, तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों में विश्व भर से छात्र आते थे), आध्यात्मिक, भक्ति, बहुदेववाद, एकदेववाद ऐसे अनेक विचारो का प्रसार इन परंपराओं के माध्यम से प्रचलित होते गया| इसी भारतीय ज्ञान परंपरा ने जीवन के उद्देश, सत्य की संकल्पनाओ की समझ दी| महावीर और गौतम बुद्ध ने वेदों के कर्मकांड प्रवृत्ति का विरोध करते करुणा और अहिंसा का मार्ग बताया साथ ही इन विज्ञानवादी दार्शनिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विचारो का प्रभाव लोगो पर पड़ता भी गया| तो मध्ययुगीन काल में आक्रमणों राजनीती अस्थिरता, भक्ति काल में कबीर, तुलसी, मीरा, गुरुनानक ने जनमानस को नैतिक मूल्यों के महत्त्व अपनी वाणी के माध्यम से बताये| सूफी परंपरा ने प्रेम और सहिष्णुता का सन्देश दिया| भारत की परंपराओं ने संस्कृति को जन्म दिया और संस्कृति ने लोगो को प्रभावित किया| परन्तु मध्ययुगीन या आधुनिक कथाओ या सत्य घटनाओ पर आधारित धवाहिका का प्रभाव सामान्य लोगो पर जितना नहीं हुआ, पौराणिक कथाओ का प्रभाव अधिक हुआ| एक प्रकार से जिन संस्कृतियों को जन मानस तक पहुचाने का कार्य करना ही उद्देश था जिसे दूरदर्शन ने बखूबी निभाया, इस विषय पर **अन्तानियो ग्राम्शी** भी कल्चरल हेजेमोनी की जब बात करते है तब कहते है की, "संस्कृति हमारे जीवन में बड़ा प्रभाव डालती है" और समाज में किस प्रकार की संस्कृति का प्रसरण होना चाहिए पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था में टेलिव्हिजन के माध्यम से बखूबी निभाया जा रहा है| पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था भी लोकप्रिय समझी जाने वाली संस्कृति को महत्त्व दे रही है, उस संकृति को सामान्य लोग विशेष रूप से स्त्रियाँ भी बड़े पैमाने पर स्वीकारती है और उसी प्रकार का आचरण करती है| वर्त्तमान में ऐसे अनेक विशिष्ट आयोजन किये जाते है, जो धीरे-धीरे परंपरा या संस्कृति का रूप धारण कर लेते है, ये सभी कृतियों को दूरदर्शन के द्वारा ही प्रसारित किया जाता है, जो जनसमूह में प्रचलित हो रहा है, और इस ही भारतीय ज्ञान परंपरा माना जा रहा है|

अनुसंधान पद्धतिशास्त्र: व्यक्ति की जिज्ञासा अनुसंधान का आधार होता है, सामाजिक अनुसंधान सामाजिक जीवन की गहन छानबीन करने की प्राविधि है, नये ज्ञान की प्राप्ति के लिए नियमबद्ध प्रयत्नों को अनुसंधान कहते है| उपर्युक्त संशोधन विषय के प्रभाव को जानने हेतु संशोधनकर्ती ने द्वितिय तथ्यों को आधार बनाकर निम्नलिखित उद्देश्य जानने हेतु इस विषय का चुनाव किया|

शोध निबंध का उद्देश्य

१. दूरदर्शन और भारतीय ज्ञान परंपरा के संबंधो को जानना,

२. दूरदर्शन के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा प्रसारित करने के उद्देशो को जानना,
३. दूरदर्शन का सामान्य लोगो पर होनेवाले प्रभाओं को जानना,

विश्लेषण: दूरदर्शन में प्रसारित धार्मिक व् ऐतिहासिक धारावाहिकों का सामान्य लोगो पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसे देखकर लोग अपने खाली समय, थकान व् तनाव को कुछ पल के लिए ही सही भुलाना चाहते है| परन्तु धीरे -धीरे ये कार्यक्रम लोगो के मानसिकता पर परिणाम करने लगे, ये कार्यक्रम या धारावाहिक लोगो के रोजमर्रा की जरुरत बन चूका जो सामान्य लोगो के चर्चा का भी विषय बनने लगा| धारावाहिक के रूप में रामायण, महाभारत (१९८८), श्रीकृष्ण, देवो के देव महादेव, महाभारत (२०१३), राधाकृष्ण, ओम नमह: शिवाय, जय हनुमान, धर्म योध्दा गरुड़, विष्णु पूराण, श्री गणेश, माता की चौकी, सुर्यपुत्र कर्ण, श्रीमद भगवत महापुराण, उपनिषद् गंगा, देवलोक, चाणक्य, इत्यादि धारावाहिक में भारत की संस्कृति का चित्रण गृहणियों के टाइम पास के साधन साथ-साथ हिन्दू संस्कृतियों के परम्पराओं के प्रसारण का भी हिस्सा बनने लगा| दूरदर्शन के माध्यम से प्रचलित किया जा रहा है, की भारतीय ज्ञान प्रणाली समृध्द और प्राचीन ज्ञान का भंडार है, जिसमे ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, कला, साहित्य तथा अनेक क्षेत्रो का ज्ञान समाहित है|

दूरदर्शन पर रामायण ने राम की भक्ति करनेवाले अलग-अलग पंथ के लोगो को एकत्र लाया और भारत का वह कोई भी राज्य हो उनकी रीति-रिवाज को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अपनाने की संकल्पना को जन्म दिया |

वैदिक परंपराएँ जो सनातन धर्म की निंव मानी जाती है, जिसमे कर्म, पुनर्जन्म, आत्मा, अध्यात्म इत्यादि बातो पर बल दिया जाता है, जिसे भारतीय संस्कृति का मूल आधार माना जाता है, इसने लोगो के मस्तिष्क में उद्दीपन निर्माण किये|

मानसिक उद्दीपन: मानसिक उद्दीपन मस्तिष्क की वह प्रक्रिया होती है जो मस्तिष्क को सक्रिय और व्यस्त रखने वाली कोई गतिविधि जैसे-पहेलियाँ सुलझाना, पढ़ना, नयी चीजे सिखना इत्यादि यह एक आतंरिक प्रक्रिया है, जो बाहरी और आतंरिक संकेतो से शुरू होती है और मस्तिष्क को व्यायाम कराती है|

वर्त्तमान में मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रखने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली को महत्वपूर्ण बताने का प्रयास जोरो पर है| इतना ही नहीं तो जब भी भारतीय ज्ञान परंपरा की बहस होती है, यह बताने का प्रयास किया जाता है की भारत में पूर्व से ही समान शिक्षा प्रणाली रही है, जबकि बुद्ध काल को छोडकर ऐसे प्रमाण कम ही मिलते है जब शूद्रों या महिलाओं के शिक्षा के सम्बन्ध में समानता दृष्टिगोचार होती हो| जिन ऋषियों या विदुषियों की बातें की जाती फिर वे ऋषि वेद व्यास हो जो जिन्हें शुद्र कहा जाता है जबकि उनकी माता शुद्र थी जो मल्लाह जाती की थी जो शुद्र थी परन्तु पिता ऋषि पराशर थे जो ब्राह्मण थे| भारत में पितृसत्ता व्यवष्ठ है और जाती पिता की प्राप्त होती है तो स्त्रियों में भी जिन स्त्रियों की बात की जाती है वें मैत्रेयी, लोपामुद्रा, गार्गी, घोषा ये उच्च स्तरीय विदुषियों थी जो एक तो स्वयं ऋषि थी, या ऋषिमुनियों की पत्नी या फिर बेटी थी| उदा.- मैत्रेयी ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी थी, लोपामुद्रा ऋषि अगस्त्य की पत्नी यही, गार्गी ऋषि वचक्नु की पुत्री थी, घोषा ऋषि कक्षीवान की बेटी थी|

भारतीय ज्ञान प्रणाली में जहाँ ज्ञान विशिष्ट लोगो तक सिमिति थी, समय के साथ उसका स्वरुप बदलते गया, जिसके लिए महात्मा ज्योतिबा फुले, क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले, शाहू महाराज, तुकडोजी महाराज, संत गाडगे महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर इनके कार्यो को भुलाया नहीं जा सकता| वर्तमान में जहाँ युवाओं में भविष्य के प्रति चिंता का माहौल दिखाई देता है, तो वहीँ एक बड़ा समूह, फिर वह ग्रामीण हो या शहरी, अधिक पढ़े-लिखे हो या कम पढ़े-लिखे और तो और महिलाये ही क्यों न हो परंपराओं को मानने वाले होते है, और इन परंपराओं को निभाने के लिए किये जाने वाले रीति-रिवाज हो, कर्मकांड हो, उपवास हो उन पर लादे नहीं जाते बल्कि वे स्वयं इसका चुनाव करते है| और इन सभी का पालन करना उन्हें अच्छा भी लगता है| और स्त्रियाँ तो ये सब करके स्वयं को आदर्श स्त्री के मानदंडो में रखकर स्व मूल्यांकन करती रहती है और समाधान मानती है| उनके इस व्यवहार पर निश्चित ही दूरदर्शन का प्रभाव माना जा सकता है, क्यूंकि ऐसे कई चित्रपट आये है जिसने महिला दर्शकों पर गहरा प्रभाव डाला है जिसमे 'हम आपके है कौन', 'कभी ख़ुशी कभी गम', 'दिलवाले दुल्हनियां ले जायेंगे', 'विवाह' "कंतारा', 'आदिपुरुष', इत्यादि चित्रपटों में से कई चित्रपट ऐसे रहे है जिसमे आदर्श स्त्री की संकल्पना दर्शायी गई है| जिसमे स्त्रियों को पारंपरिक रूप से परंपरा का पालन करते हुए दिखाया गया है, और स्त्रियाँ ख़ुशी-ख़ुशी इसका पालन कर रही है, इसी प्रकार टेलिव्हिजन के धारावाहिकों में भी स्त्रियों को यही करते दिखाया जाता है धीरे धीरे सामान्य लोग व स्त्रियों की भी यही पसंद बनते जा रही है|

जिस रामायण में सामाजिक राजकीय परिस्थिती किस प्रकार भारतीय संस्कृति का भाग रहे है यह बताने का प्रयास किया गया उसके बाद भारत को हिन्दू राष्ट्र के रूप में उभरने जैसी चर्चाओं ने जन्म लेना सुरु कर

दिया| अर्थात इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता की धारावाहिकों में सर्वसामान्य लोगो के मनों पर एक विशिष्ट संस्कृति के प्रति आदर सम्मान बढाया है |

संस्कृती से विचारधाराय बनती है और ज्ञान और विचार की निर्मिती भी होती है, जो समाज की परंपरा को बनाती है जिस प्रकार के ज्ञान प्रचलित होंगे उसी प्रकार के विचार की निर्मिती की जाती है|

जिस रामायण काल को त्रेता युग कहा जाता है जो वैदिक के पूर्व का माना जाता है, और रामायण को आदर्श ग्रन्थ व् हिन्दू धर्म का पवित्र ग्रन्थ माना जाता है, और भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है और जिसमे समानता की बातें की जाती है तो प्रश्न यह भी उठता है की उसी रामायण में शम्बूक वध का भी उल्लेख मिलता है, जिसमे की एक शुद्र व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले तप के कारण नगर में अनिष्ट घट्ना घटित होने के कारण राम द्वारा शम्बूक का वध किया जाता है, अर्थात जिस शुद्र के तप करने से अनिष्ट घटना हो सकती है, तब समानता अस्तित्व में थी कैसे कहा जा सकता है? इसका अर्थ ही है विशिष्ट जाती, धर्म व् संस्कृति को ही संस्कृति मानना और इसी प्रकार के छदम ज्ञान का प्रसारण करना, जिसे दूरदर्शन के माध्यम से बखूबी प्रसारित किया जा रहा है| **सोक्रेटिस** ज्ञान को सद्गुण मानते थे, उनका मानना था की की लोग अपनी मुर्खता की वजह से गलती करते है, अपराधी व्यक्ति एक मुर्ख होता है, या उसकी मति भ्रष्ट होती है, और ऐसे में दोनों ही प्रकार के अपराधियों को हम क्या कर रहे है यह पता नहीं होता है| (पृ.क्र.७९,हेनरी थॉमस अनुवाद-सने गुरूजी, मानवजातिची कथा)| मति विकसित करने की प्रक्रिया ही जिस शिक्षा से होती है, उस शिक्षा का प्रचार-प्रसार भारत में सर्वसामान्य लोगो के लिए पाश्चात्य और विशेष रूप से जिस मैकाले को दोष दिया जाता जाता है की उसकी वजह से अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार प्रसार बढा है तो प्रश्न यह निर्माण होता है की पश्चिम देशो में बड़े प्रमाण में ब्राह्मणों ने क्यों पलायन किया? या आज भी देश में विशेष रूप से महाराष्ट्र में हजारो की संख्या में मराठी माध्यम या अन्य राज्यों में भाषिक माध्यम के स्कूल बंद क्यों किये जा रहे है? या अंग्रेजी माध्यमो के स्कूलों को शुरू करने की अनुमति क्यों दी जा रही है? या शासन व्यवस्था पश्चिम में जाकर आर्थिक व्यवहार क्यों बढ़ा रहे है? साथ ही इसका भी जवाब देना होगा की जिन भौतिक संसाधनों को हम बड़े प्रमाण में उपभोग कर रहे है क्या उसका उत्पादन हम भारत में कर रहे है? क्या केवल संस्कृति को थोपना ही भारतीय ज्ञान परंपरा या राष्ट्रवाद है? जिस भारतीय संस्कृति में बहुसंख्य शुद्रो - दलितों के संस्कृतियों को संस्कृति ही नहीं माना जाता वहां वैदिक संस्कृति के प्रसरण को षड्यंत्र नहीं माना जा सकता है? क्योंकी माना जाता है की वसुधैव कुटुम्बकम की भूमि से विश्व के कोने-कोने में फैले भारतीय जहाँ भी गए वहाँ विषम परिस्थितियों में भी अपनी परंपराओं को जीवित रखा| अब प्रश्न यह उठता है की किन परंपराओं को जीवित रखा? क्या जाती व्यवस्था जीवित रखा है? आज भी हर राज्यों में ऐसे कई उदहारण मिलेंगे जब ऊँची जाती की लड़की निम्न जाती के लड़के से विवाह कर ले तब सीरियल किलिंग की घटनाये होती है| या यह कहा जाता है की आधुनिक पश्चिमी सभ्यता स्व केंद्री है तो क्या पश्चिम में स्थाई हुए उच्च जाती के लोग स्व केंद्री है?

निष्कर्ष: दूरदर्शन पुंजीवादी व्यवस्था का एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरकर सामने आ रहा है| जिसके जरिये वह बाजार को अपनी मुठ्ठी मे कर रहा है, और बेशुमार लाभ कमा रहा है, जिसके केंद्र में सामान्य लोग ही है| रेडिओ, पत्रिका व इंटरनेट की तुलना में दूरदर्शन ने कई जद्दो जहद से अपनी विजय की पताका लहराई है| महत्वपूर्ण यह है की इसके पीछे किस प्रकार की विचारधारा कार्य कर रही है? यह विचारधारा एक ऐसी प्रक्रिया होती है जो जो व्यक्ति या समूह के दृस्तिकों को आकर देती है| और इसी विचारधारा ने इस दूरदर्शन के माध्यम से लोगो के मनोविज्ञान व वर्तमान समाज व इतिहास के अनुभव से यह जाना की समाज को क्या चाहिये? क्या नहीं, या समाज की रूचि या रुझान किसमे है| दूरदर्शन इससे भलीभांति परिचित है| एक प्रकार से दूरदर्शन एक नयी संस्कृती निर्माण करने की प्रक्रिया कर रहा है| दुसरे शब्दों में या यह भी कह सकते है की दूरदर्शन ने एक नई संस्कृती स्थापित करने का प्रयास किया है| यह वर्तमान सर्वाधिक प्रभावी माध्यम है, जिसे नयी विचारधारा का उत्पादक मानना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी|

सन्दर्भ:

१. गजेंद्रगड़ व्ही. एन. और हेंडगे आर., ज्ञानाचे समाजशास्त्र, चिन्मय प्रकाशन, २०२५
२. गेल अम्वेट, भारतातील बौद्ध धम्म , मधुश्री पब्लिकेशन, पुणे २०२५
३. सिगमंड फ्रॉईड, फ्रॉईड: मनोविश्लेषण, राजपाल पब्लिकेशन, दिल्ली पे. क्र. २०२४
४. कोसंबी, प्राचीन भारतीय संस्कृति व सभ्यता, डायमंड पब्लिकेशन पुणे २०२
५. प्रदीप श्रीधर, भारतीय ज्ञान परम्पराएँ विषयगत अनुशीलन, सदिनामा प्रकाशन, २०२५
६. सिगमंड फ्रॉईड, सपनों का मनोविज्ञान, शिक्षा भारती प्रकाशन दिल्ली २०२५
७. .कोसंबी डी. डी., भारतीय इतिहासाचा अभ्यास, डायमंड पब्लिकेशन पुणे २०२२
८. भागवत विद्युत, समकालीन भारतीय समाज, डायमंड पब्लिकेशन पुणे २०२३
९. हेनरी थॉमस अनुवाद-साने गुरूजी, मानवजातिची कथा, मधुश्री पब्लिकेशन, पुणे २०२४